International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

CTET, UTET एवं UGC-NET परीक्षाओं की विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिकता तथा बढ़ते शैक्षिक भार का अध्ययन

डॉ. अजय सिंह यादव

शोधकर्ता

सारांश

वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक बनने तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अकादमिक एवं शोध संबंधी अवसर प्राप्त करने के लिए विभिन्न पात्रता परीक्षाओं का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। CTET (Central Teacher Eligibility Test), UTET (Uttarakhand Teacher Eligibility Test) तथा UGC-NET (University Grants Commission–National Eligibility Test) विद्यार्थियों और अभ्यर्थियों के लिए महत्वपूर्ण परीक्षाएँ हैं। इन परीक्षाओं का मूल उद्देश्य केवल प्रमाण-पत्र प्रदान करना नहीं, बल्कि शिक्षण एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यक ज्ञान, दक्षता और योग्यता का मानकीकरण करना है।

हालाँकि, इन परीक्षाओं की उपयोगिता के साथ-साथ विद्यार्थियों पर परीक्षा-तैयारी का बढ़ता हुआ भार भी एक महत्वपूर्ण शैक्षिक प्रश्न है। एक ही विद्यार्थी को स्नातक, परास्नातक, व्यावसायिक प्रशिक्षण, प्रतियोगी परीक्षाओं, पात्रता परीक्षाओं और कभी-कभी शोध प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी समानांतर रूप से करनी पड़ती है। परिणामस्वरूप अध्ययन का उद्देश्य ज्ञानार्जन से हटकर परीक्षा-उन्मुख तैयारी तक सीमित होने का खतरा उत्पन्न होता है।

यह शोधपत्र CTET, UTET एवं UGC-NET की आवश्यकता, उपयोगिता, समानताएँ एवं भिन्नताएँ, विद्यार्थियों पर पड़ने वाले शैक्षिक भार, परीक्षा-केंद्रित संस्कृति, मानसिक दबाव तथा वर्तमान व्यवस्था में संभावित सुधारों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: CTET, UTET, UGC-NET, शिक्षक पात्रता परीक्षा, विद्यार्थी, परीक्षा भार, प्रतियोगिता, शैक्षिक दबाव, शिक्षक शिक्षा, उच्च शिक्षा।

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का प्रमुख आधार है। शिक्षा की गुणवत्ता काफी हद तक शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इसी कारण भारत में शिक्षक नियुक्ति से पूर्व अभ्यर्थियों की शैक्षिक एवं व्यावसायिक योग्यता का परीक्षण करने के लिए पात्रता परीक्षाओं की व्यवस्था विकसित हुई है।

CTET इसी व्यापक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण भाग है। शिक्षक गुणवत्ता के लिए मानक एवं बेंचमार्क स्थापित करना तथा शिक्षक शिक्षा संस्थानों और विद्यार्थियों को अपने प्रदर्शन के स्तर में सुधार के लिए प्रेरित करना TET व्यवस्था के प्रमुख उद्देश्यों में है।

इसी प्रकार विभिन्न राज्यों में राज्य-स्तरीय शिक्षक पात्रता परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। उत्तराखंड में UTET इसी प्रकार की परीक्षा है। उच्च शिक्षा में UGC-NET का स्वरूप अलग है और इसका संबंध उच्च शिक्षा, अध्यापन तथा शोध से है।

इस प्रकार तीनों परीक्षाएँ शिक्षा के अलग-अलग स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या इन परीक्षाओं की बढ़ती संख्या और तैयारी का भार विद्यार्थी की वास्तविक सीखने की क्षमता को प्रभावित कर रहा है?

2. अध्ययन की आवश्यकता

आज का विद्यार्थी केवल नियमित पाठ्यक्रम का अध्ययन नहीं करता। उसे अपने भविष्य के रोजगार और करियर को ध्यान में रखते हुए अनेक परीक्षाओं की तैयारी करनी पड़ती है।

शिक्षक बनने की इच्छा रखने वाला विद्यार्थी स्नातक, B.Ed. अथवा संबंधित शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम, CTET या किसी राज्य TET, विभिन्न भर्ती परीक्षाओं और आगे MA/M.Ed. जैसे कार्यक्रमों के साथ उच्च शिक्षा में करियर के लिए UGC-NET की तैयारी भी कर सकता है।

इस पूरी प्रक्रिया में विद्यार्थी का काफी समय परीक्षा की तैयारी में खर्च होता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि पात्रता परीक्षाओं की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए उनके कारण उत्पन्न होने वाले अनावश्यक दोहराव और भार का भी अध्ययन किया जाए।

3. CTET की प्रासंगिकता

CTET केंद्रीय स्तर की शिक्षक पात्रता परीक्षा है। इसका संचालन CBSE द्वारा किया जाता है। शिक्षक नियुक्ति के संदर्भ में TET को आवश्यक योग्यता के रूप में निर्धारित किया गया है और इसका उद्देश्य शिक्षक गुणवत्ता के लिए राष्ट्रीय मानक विकसित करना है।

CTET की प्रमुख प्रासंगिकताएँ हैं:

- शिक्षक गुणवत्ता का मानकीकरण।
- बाल-केंद्रित शिक्षा पर बल।
- राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक नियुक्ति से संबंधित अवसरों के लिए पात्रता।
- शिक्षक शिक्षा में सुधार।
- शिक्षण-अधिगम एवं शैक्षिक मनोविज्ञान की समझ का परीक्षण।

4. UTET की प्रासंगिकता

UTET उत्तराखंड राज्य में शिक्षक पात्रता से संबंधित परीक्षा है। उत्तराखंड विद्यालयी शिक्षा परिषद द्वारा UTET से संबंधित अधिसूचनाएँ और परीक्षा-सूचनाएँ जारी की जाती हैं।

राज्य-स्तरीय TET का महत्व इसलिए है क्योंकि प्रत्येक राज्य की विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था, भर्ती आवश्यकताएँ और प्रशासनिक परिस्थितियाँ कुछ हद तक अलग हो सकती हैं। UTET के माध्यम से राज्य में शिक्षक बनने के इच्छुक अभ्यर्थियों के लिए पात्रता का एक मानक बनाया जाता है तथा शिक्षक शिक्षा और विद्यालयी शिक्षण के बीच संबंध मजबूत किया जा सकता है।

5. UGC-NET की प्रासंगिकता

UGC-NET का स्वरूप CTET और UTET से अलग है। इसका संबंध मुख्यतः उच्च शिक्षा, अध्यापन और शोध से है। UGC-NET के माध्यम से विभिन्न श्रेणियों में पात्रता निर्धारित की जाती है, जिसमें Assistant Professor, Junior Research Fellowship तथा PhD से संबंधित पात्रता शामिल है।

UGC-NET की उपयोगिता:

1. उच्च शिक्षा में अकादमिक करियर की दिशा में मार्ग।
2. शोध संस्कृति को बढ़ावा।
3. विषयगत ज्ञान का परीक्षण।
4. राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा का अवसर।

UGC-NET की प्रतिस्पर्धा का स्तर व्यापक है। जून 2025 सत्र में NTA के अनुसार 10,19,751 अभ्यर्थियों ने पंजीकरण किया और 7,52,007 अभ्यर्थी परीक्षा में उपस्थित हुए।

6. परीक्षाओं का बढ़ता हुआ शैक्षिक भार

परीक्षा अपने आप में हमेशा भार का कारण नहीं होती। समस्या तब उत्पन्न होती है जब विद्यार्थी को एक ही प्रकार के ज्ञान और कौशल को बार-बार अलग-अलग परीक्षाओं के लिए तैयार करना पड़े।

1. पाठ्यक्रम का दोहराव – समान अवधारणाओं की अलग-अलग परीक्षा प्रणालियों के अनुसार तैयारी।
2. समय का दबाव – नियमित पाठ्यक्रम, असाइनमेंट, प्रायोगिक कार्य और प्रतियोगी तैयारी के बीच संतुलन।
3. आर्थिक भार – परीक्षा शुल्क, पुस्तकें, कोचिंग, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और यात्रा पर खर्च।
4. डिजिटल अध्ययन का दबाव – वीडियो लेक्चर, टेस्ट सीरीज, ऑनलाइन नोट्स और डिजिटल सामग्री की अधिकता।

7. परीक्षा-केंद्रित शिक्षा की समस्या

परीक्षाओं का उद्देश्य विद्यार्थी की क्षमता को मापना होना चाहिए, लेकिन जब पूरा अध्ययन केवल परीक्षा में सफल होने तक सीमित हो जाता है तो शिक्षा की व्यापक अवधारणा प्रभावित हो सकती है।

विद्यार्थी यह सोचने लगता है कि क्या पढ़ना उपयोगी है के स्थान पर परीक्षा में क्या पूछा जाएगा। शिक्षक बनने वाले विद्यार्थी के लिए केवल MCQ हल करने की क्षमता पर्याप्त नहीं है। उसमें कक्षा प्रबंधन, संप्रेषण कौशल, बाल मनोविज्ञान, रचनात्मकता, मूल्य शिक्षा, समावेशी शिक्षा, समस्या समाधान और तकनीकी दक्षता जैसी क्षमताएँ भी आवश्यक हैं।

8. मानसिक एवं भावनात्मक दबाव

अत्यधिक प्रतिस्पर्धा विद्यार्थी में परीक्षा-संबंधी तनाव को बढ़ा सकती है। विशेष रूप से तब जब परीक्षा परिणाम को भविष्य की नौकरी से सीधे जोड़कर देखा जाता है।

बार-बार परीक्षा देने के कारण कुछ विद्यार्थियों में असफलता का भय, आत्मविश्वास में कमी, लगातार पढ़ने का दबाव, भविष्य को लेकर चिंता और सामाजिक तुलना जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

इसलिए परीक्षा व्यवस्था का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल प्रतिस्पर्धी बनाना नहीं बल्कि सक्षम, आत्मविश्वासी और रचनात्मक बनाना भी होना चाहिए।

9. CTET, UTET और UGC-NET का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

CTET राष्ट्रीय स्तर पर विद्यालयी शिक्षक पात्रता से संबंधित है। UTET राज्य स्तर पर उत्तराखंड में शिक्षक पात्रता से संबंधित है। UGC-NET राष्ट्रीय स्तर पर उच्च शिक्षा एवं शोध से संबंधित पात्रता निर्धारित करता है।

तीनों परीक्षाओं के उद्देश्य अलग हैं, इसलिए इनके बीच सीधी समानता नहीं की जा सकती। फिर भी विद्यार्थी के करियर-मार्ग में ये परीक्षाएँ क्रमशः विद्यालयी शिक्षण और उच्च शिक्षा/शोध के अवसरों से जुड़ सकती हैं। वास्तविक नियुक्ति या प्रवेश संबंधित भर्ती अथवा विश्वविद्यालय के वर्तमान नियमों पर निर्भर करता है।

10. क्या परीक्षाएँ विद्यार्थियों के लिए बोझ हैं?

इस प्रश्न का उत्तर सीधे हाँ या नहीं में देना उचित नहीं होगा। परीक्षा स्वयं बोझ नहीं है। बोझ तब बनता है जब परीक्षाओं की संख्या अत्यधिक हो, पाठ्यक्रमों में अनावश्यक समानता हो, एक ही योग्यता को अनेक बार प्रमाणित करना पड़े, परीक्षा और रोजगार के बीच लंबा अंतराल हो, महंगी कोचिंग आवश्यक समझी जाने लगे और परिणाम की अनिश्चितता लंबे समय तक बनी रहे।

इसलिए समस्या परीक्षा की अवधारणा से अधिक परीक्षा-प्रणाली के समन्वय की है।

11. सुधार की संभावनाएँ

1. परीक्षा प्रणालियों में समन्वय – समान उद्देश्य वाली परीक्षाओं के बीच बेहतर तालमेल।
2. एकीकृत पात्रता मॉडल – मूल ज्ञान और व्यावसायिक दक्षता का समग्र मूल्यांकन।
3. प्रमाणपत्र की उपयोगिता स्पष्ट करना – विद्यार्थी को पात्रता और उसके उपयोग की स्पष्ट जानकारी।
4. पाठ्यक्रम में संतुलन – अनुप्रयोग, विश्लेषण, समस्या समाधान, शिक्षण कौशल और रचनात्मकता को महत्व।
5. परीक्षा की तैयारी को शिक्षा से जोड़ना – B.Ed., M.Ed. और शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों तथा TET तैयारी के बीच अकादमिक संबंध।
6. आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए समान अवसर।
7. आधिकारिक अध्ययन सामग्री की गुणवत्ता और उपलब्धता बढ़ाना।
8. शिक्षक पात्रता में लिखित परीक्षा के साथ व्यावहारिक शिक्षण-कौशल का उचित मूल्यांकन।

12. शोध के प्रमुख निष्कर्ष

1. CTET और UTET जैसी TET परीक्षाएँ शिक्षक गुणवत्ता के मानकीकरण में उपयोगी भूमिका निभाती हैं।
2. UGC-NET उच्च शिक्षा और शोध के क्षेत्र में महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा है।
3. इन परीक्षाओं की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता।
4. अनेक परीक्षाओं की तैयारी विद्यार्थियों के समय और संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव डाल सकती है।
5. परीक्षा-केंद्रित अध्ययन से शिक्षा के व्यावहारिक एवं रचनात्मक पक्ष की उपेक्षा का खतरा रहता है।
6. शिक्षक बनने वाले विद्यार्थियों के लिए केवल लिखित परीक्षा पर्याप्त मूल्यांकन नहीं है।
7. उच्च शिक्षा में प्रतिस्पर्धा का विस्तार UGC-NET में बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों की भागीदारी से स्पष्ट होता है।
8. समाधान परीक्षाओं को समाप्त करना नहीं बल्कि उनकी संरचना, समय-सारणी और उद्देश्य में बेहतर समन्वय स्थापित करना है।
9. विद्यार्थी-केंद्रित परीक्षा व्यवस्था भविष्य की शिक्षा नीति का महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए।

13. सुझाव

शिक्षा व्यवस्था में निम्न सुधार उपयोगी हो सकते हैं:

पहला, समान उद्देश्य वाली परीक्षाओं के बीच समन्वय स्थापित किया जाए।

दूसरा, परीक्षा की तैयारी को डिग्री पाठ्यक्रम से जोड़ा जाए ताकि विद्यार्थी को एक ही विषय को अलग-अलग रूपों में बार-बार न पढ़ना पड़े।

तीसरा, शिक्षक पात्रता में लिखित परीक्षा के साथ शिक्षण-कौशल, संप्रेषण और व्यावहारिक क्षमता को भी उचित महत्व दिया जाए।

चौथा, परीक्षा परिणाम और वास्तविक नियुक्ति के बीच अनावश्यक विलंब कम किया जाए।

पाँचवाँ, आधिकारिक अध्ययन सामग्री को सरल, गुणवत्तापूर्ण और आसानी से उपलब्ध कराया जाए।

छठा, विद्यार्थियों को परीक्षा-परिणाम के बजाय दीर्घकालिक व्यावसायिक दक्षता के लिए तैयार किया जाए।

14. निष्कर्ष

CTET, UTET और UGC-NET भारतीय शिक्षा व्यवस्था में अलग-अलग स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली परीक्षाएँ हैं। CTET और UTET का संबंध मुख्यतः शिक्षक पात्रता से है, जबकि UGC-NET उच्च शिक्षा, अध्यापन और शोध के क्षेत्र में पात्रता से संबंधित है। इनके माध्यम से शिक्षा क्षेत्र में न्यूनतम एवं राष्ट्रीय/राज्य स्तर के मानकों को स्थापित करने का प्रयास किया जाता है।

लेकिन शिक्षा व्यवस्था का अंतिम उद्देश्य केवल परीक्षाएँ पास करवाना नहीं होना चाहिए। विद्यार्थी का विकास ज्ञान, कौशल, चिंतन, रचनात्मकता, संवेदनशीलता और व्यावसायिक दक्षता के रूप में होना चाहिए।

अतः वर्तमान समय की आवश्यकता "अधिक परीक्षाएँ" नहीं बल्कि "अधिक सार्थक मूल्यांकन" है। यदि अलग-अलग परीक्षाओं के उद्देश्यों में बेहतर समन्वय स्थापित किया जाए, पाठ्यक्रम के अनावश्यक दोहराव को कम किया जाए और व्यावहारिक दक्षताओं को महत्व दिया जाए तो विद्यार्थियों पर पड़ने वाले अनावश्यक शैक्षिक भार को कम किया जा सकता है।

इस प्रकार शिक्षक शिक्षा और उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखते हुए ऐसी परीक्षा व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए जो विद्यार्थी को केवल प्रतियोगिता के लिए नहीं, बल्कि एक सक्षम शिक्षक, शोधकर्ता और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करे।

संदर्भ

1. Central Board of Secondary Education, Central Teacher Eligibility Test (CTET), आधिकारिक पोर्टल एवं परिचय।
2. Central Teacher Eligibility Test, Information Bulletin.
3. Uttarakhand Board of School Education, UTET संबंधी आधिकारिक सूचना।
4. National Testing Agency/UGC, UGC-NET संबंधी आधिकारिक अधिसूचनाएँ।